# पात्र-परिचय

## पुरुष

१ हेमत ... हिमवान्, गौरीक पिता, पर्वतराज ।

२ दिगम्बर ... शूलपाणि, शंकर, शिव, गौरीक वर ।

३ नारद ... ऋषि, घटक ।

४ ब्रह्मा ... विधाता ।

५ हरि ... विष्णु ।

६ मदन ... कामदेव ।



## स्त्री

१ मनाइनि ... मएना, गौरीक माय ।

२ गौरी ... हिमालयक पुत्री, कन्या, नायिका ।

३ रति ... कामदेवक स्त्री ।

४ नोना ... योगिनी, वशीकरण मे पटु ।



शिवदत्त कृत

# गौरीप्रणय-नाटक

वन्दो[1] वारिज[2] - चरणयुग मंगल-करण गणेश ।
विघन हरन कए शरण देहु, लम्बोदर विघनेश[3] ॥
एकरदन[4] गजवदन महाप्रभु, मदजल चुअत कपोल ।
असरन-सरन सकल भय सुनिअ, दुखनाशन एकबोल ॥
अतिगुनमन्त सन्त-सुखदायक, गिरिजा-नन्दन नाम ।
तुअ पद सेवि[5] बिघ्न-मन[1] आकुल, कतहु न भेटए ठाम ॥
विघन निवारि[6] तोरित[7] मन पुरहु, दुखमोचन सुखधाम ।
शिवदत्त भन तुअ सरनागत पुरहु हमर मनकाम ॥१॥

हेमत[8] मनाइनि[9] आदि भवानि ।
ब्रह्मा हरि नारद शुलपाणि ॥
नृपति मदन[10] वन देत परवेश ।
रति आउति निज पतिक उदेश ॥
आउति योगिनि नौना नाम ।
जनिकर लोग विदित सभ ठाम ॥

---

टिप्पणी

१—वन्दना करैत छी । २—वरिज चरण युग—चरण कमलद्वय ।
३—विघ्नक ईश (पति) । ४—एकदन्त (गणेश), एक दाँत वाला ।
५—सेवा कयनिहारक विघ्नक मन विकल होइछ । तेँ विघ्नेश अहाँक नाम थिक । ६—हटाए । ७—त्वरित=शीघ्र ।
८—हिमालय । ९—मएना, पार्वतीक माय । १०—कामदेव ।

---

1—'विघ्नमन'—छपलहा पोथी मे । 'पसेवि विघ्न'—मूल पोथी ।

शीवदत्त हर हरह कलेश ।
एहि नाटक एतबा परवेश ॥२॥

हेमगिरि-राजकुमारि[१] तपोवन, देखए चललि तसु आजे ।
कए परिहास मधुर धुनि मञ्जुल, सखिगन साथ समाजे ॥
अम्बर[२] ललित बलित[३] सभ भूषण, भमहु[४] लतातल मूले ।
रहथि[५] फिरथि गोरि सगर तपोवन, निज कर तोड़इत फूले ॥
एहि अवसर गोरि देखल दिगम्बर, बाढ़ल मन अनुरागे ।
सुदिन अपन घर हम तखि छाड़ल धन्य हमर थिक भागे ॥
कर जोड़ि 2विनति सखीसँ गिरिजा, कहए लागलि पुनु आजे ।
शीवदत्त भन पुरह सबय भय, राखु सरन केर लाजे ॥३।

देखल तपोवन, [६]पुलक पुरल मन हे ।
आहे सखि, बाढ़ल शिवक सिनेह,
[७]गेह नहि जाएब हे ॥
थिका त्रिभुवनपति, उचित हमर पति हे ।
आहे सखि4 हम नहि छोड़ब समाज,
आज सखि हिनकर हे ॥
शिव भए परसन, जखन पुरत मन हे ।
आहे सखि5, ता लगि धरब धेआन,
आन नहि मन पर हे ॥

१—पार्वती । २—कपड़ा । ३ - शोभित । ४ - लती सभक तर ओ
जड़ि लग घुमैत छथि ५ - एकान्त मे ।
६ - आनन्देँ । ७ - घर (गाम पर) ।

1 - न सातल । 2 - बिनती ।

4, 5 - ० ० ( अभाव । )



सुन्दर सरङ्ग, देखु6 जटामहु[८] गङ्ग देखु हे ।
आहे सखि, ससि[९] शिव-तिलक विराज
साज सखि देखहु हे ॥
तीनि नयन हर, पाँच वदन वर हे ।
आहे सखि, रुण्डमाल बघछाल,
[१०]व्याल उर ऊपर हे ॥
बसह[११] चढ़ल हर, त्रिसुल दहिन कर हे ।
आहे सखि, हेरइत हरल गेआन,
धेआन7 मन लागल हे ॥
शीवदत्त भन, तोरित[१२] पुरह मन हे ।
आगे माइ, गौरि-सहित-सुलपानि
जानि सरनागत हे ॥४॥

जाय अपन निज वास, सबहि सँ कहब हे ।
छोड़ब न सङ्कर पास, एतहि हम रहब हे ॥
जप-तप करए समाज, प्रेम हम लाओब हे ।
सङ्कर-चरन मनाय, उचित पहु पाओब हे ॥
तात११-भवन सखि जाय, सबहु इहे भाखब हे ।
बिसरि चलिअ जनु मोहि, सदा मन राखब हे ॥
कतोक चललि सखि गेह, नेह१३ गोरि मन धरि8 हे ।
कतोक रहलि सखि पास, सकल सुख १४परिहरि हे ॥
शीवदत्त9 पद ध्यान, बिनति इह कर जोड़ि हे ।
जानि अपन निज दास, तोरित मन पूरिअ हे ॥५॥

८ - जटा मे गङ्गा । ९ - चन्द्रमा । १० - छाती पर साँप । ११ - बसहा पर ।
१२ - पितृ-गृह । १३ - स्नेह । १४ - त्यागिकए ।

6—देखु । 7 — हमर । ।
8 - धरि । 9 - शिवदत्त ।

आसन गोरि[१५] मृगछाल बनाओल, रुद्रमाल[१६]कर लाय हे ।
अतुलि[१७] भगति कय चरन अराधल, अहोनिशि[१८] ध्यान लगाय हे ।।
अति सुकुमारि कठिन व्रत साधल, कय एक पवन[१९] अहार हे ।
एहिविधि[२०] राजकुमारि तपोवन, बीतल बरख हजार हे ।।
आक धुथुर फुल नवदल श्रीफल, पुजन चरन करि प्रेम हे ।
अगर गुगुल धुप अक्षत चढ़ाओल, जोग जुगुति अति[२१] नेम हे ।।
[२२]अहोनिशि जप-तप देखि सदाशिव, धएल जटिल तब भेष हे ।
शीवदत्त[10] भन गोरि वर कारन, आएल निकट महेश हे ।।६।।

भेष[11] बदलि शिव आजे ।
आएल गौरिक समाजे ।।
एतेक करिअ कथिलाई ।
के मोहि कहिअ बुझाई ।।
अति सुन्दरि तोहि देखी ।
कुल मुल[२३] कहिअ विशेषी[२४] ।।
बचन बोलि मुसुकाने ।
शीवदत्त पद भाने ।।७।।

अति तपसी मन आनी ।
बाजलि बचन भवानी ।।
[२५]हेम - गिरिराज - किसोरी ।
नाम हमर थिक गोरी ।।

१५ = गौरी । १६ - हाथ मे । १७ = अतुलि - अनुपम । १८ = दिन राति ।
१९ = हवा खाय कें । २० = एहि प्रकारें । २१ = अत्यन्त विधानपूर्वक ।
२२ = दिन-राति ।
२३ = मैथिल-ब्राह्मणक हेतु पञ्जीशास्त्रक अनुसारें मूलग्राम ।
२४ = विशेषरूपें । २५—पर्वतराज हिमालयक पुत्री ।

10 = शिवदत्त । 11 = भेख ।



जप करि अहोनिशि[२६] लागी ।
[२७]शङ्कर वर मन लागी ।।
तें हम धरिअ धेआने ।
शीवदत्त पद भाने ।।८।।

अति सुकुमारि [२८]राजगिरि-कुमरि, एतेक करहु कथिलागी ।
निरधन बूढ़, मूढ़ सब दोखन[२९] कोन गुन शिव[12] अनुरागी ।।
विधि[३०] सुरपति[३१] हरि ई सभ परिहरि[३२], जतय पुरत सभ भोगे ।
[३३]भसम भुखन[13], समसान फिरथि हर, ई वर नहि तुअ जोगे ।।
आक धुथुर फुल भांग [३४]गरल रस, भोजन अहोनिशि जाही ।
बूढ़ बड़द असवार दिगम्बर, की देखि बरबहु ताही ।।
परिजन हिनक भूतगण अनुचर, कथिलय धरहु धेआने ।
[३५]हेमगिरि कुमरि[14] चरन शरन धरि, शीवदत्त पद भाने ।।९।।

धिक धिक[15] धिक सखि ! तोहर गेआने ।
एतेक गारि सुनैछिअ काने ।।
सुनि मन होइछ परम [३६]अनुतापे ।
एत निन्दा सुनने अति पापे ।।
उतकट बचन सखी नहिँ नीक ।
के जन कतय बस, केदहु थीक[16] ।।

२६—दिनराति । २७—शङ्कर ।
२८—गौरी । २९—सब दोषसँ युक्त ओ रहस्यमय । ३०—ब्रह्मा । ३१—इन्द्र ओ विष्णु । ३२—छोड़िकय । ३३—भस्म हिनक आभूषण थिक । ३४—विष ।
३५—हिमालयक पुत्री ।
३६—दुःख ।

12 - शीव । 13 - भुखन । 14 - कुमरि ।
15 = ० । 16 - थिक ।

परम रोषित[३७] गोरि सखि[17]-मुख हेरि ।
सभ मिलि कहिअ जाओ गृह फेरि ।।
अनुचित वचन सुनि[18] मन वाम[३८] ।
उचित मोहि परितेजिअ[३९] ठाम ।।
प्रेमक वचन सुनल शिव कान ।
मन गुनि [19]शिवदत्त पद भान ।।१०।।

प्रगट भेल गोरि - निकट जाय ।
देल सदाशिव प्रेम बढ़ाय ।।
कहल महादेव सुनहु भवानि ।
सङ्कर नाम हमर जग[४०] जानि ।।
करब विवाह पुरब मनकाम ।
अब गोरि उठहु जाहु निज धाम ।।
[20]शिवदत्त सरनागत तोर ।
तोरित मनोरथ [21]पुरहु मोर ।।११।।

देखल चरन हर, ओ ओ रे, जब गोरि22 ।
जप तप सकल पुरल मोरि23 ।।
पुलक[४१] पुरल मन, ओ ओ-रे, देखि हर ।
सखि संग चलति अपन घर ।।
उमग प्रेममग[४२], ओ ओ-रे, बाढ़ल ।
तोरित[४३] तपोबल छाड़ल ।।
शिवदत्त कवि, ओ ओ रे, पद भन ।
तोरित पुरहु शिव मोर मन ।।१२।।

---

३७—समसाय । ३८—विपरीत । ३९—छोड़ि दिय । ४०—संसार मे ।
४१ - आनन्दें । ४२ - प्रेममग्न । ४३ - शीघ्र ।

---

17 - सखी । 18 - सुनि । 19 - शिवदत्त 20 - शिव । 21- पुरहु । 22 - गौरी ।
23 - मोरी ।



वर दय आदि भवानि सदाशिव, आप तपोवन जाय ।
डारि[४४] बघम्बर बैसल दिगम्बर, अहोनिशि ध्यान लगाय ।।
कठिन जोग धरि बैसल सदाशिव, रुण्डमाल[४५] कर लाय ।
मुण्डमाल उर[४६] व्याल[४७] विराजित, 24तनु म ……… ।।

देवासुर[1] संग्राम होएत गए, ताहि जुझत[१] जत वीर हे ।
से सभ मिलि अवतार धरत गए, महिमण्डल भए थीर हे ।।
हय[२] हाथी हथिआर सहित देखि महि[३] सहि सकत न भार हे ।
धरतीक भार हरब हम जायब, मथुरा लेब अवतार हे ।।
कुण्डिनपुर नृप पाय भीषमदेव, नगर परम अनुपाम हे ।
तसु कन्या कमला[४] अवतरतिहि, रुकुमिनि होएत तसु नाम हे ।।
खगपति[५] चढ़ि संवर[६] हम जीतब, तखन करब विवाह हे ।
तसु बालक मनमथ[७] अवतरताह, तनिकहु रतिक विवाह हे ।।
ई सभ सकल मदन जब बूझल, मन कयल दिढ़ ज्ञान हे ।
शङ्कर पास चलल नृप मनमथ, शिवदत्त पद भान हे ।।१८।।

चलल मदन[४८] दल साजि ना ।
तनु[४९] तनु मदन विराजि ना ।।
[५०]निरसी25 सीतल नीर ना ।
मोहित भेल समीर[५१] ना ।।

---

४४ - बाघक छालरूपी वस्त्र बिछाय । ४५ - रुद्राक्षक माला ।
४६ - छाती पर । ४७ - साँप ।
१—युद्ध करत । २—घोड़ा । ३—पृथ्वी । ४—लक्ष्मीभए । ५—गरुड़ । ६—स्वयंवर, सम्मर । ७—कामदेव ।
४८ - कामदेव । ४९ - प्रतिदेह मे । ५० - जल सँ । ५१ - वायु । ५२ - वृक्ष ।

---

24 - एतयसँ गीत संख्या १७ धरि मूल पोथी मे नहि अछि ।
1 - ई गीत छपलहा पोथी मे नहि छल ।

तरु[५२] तरु भेल संयोग ना ।
पशु मन बाढ़ल भोग ना ॥
रहल न कोइ जग धीर ना ।
सभ मन [५३]मनमथ पीड़[26] ना ॥

अमर[५४] समर[५५] नहि चैन ना ।
बाढ़ल सभ मन [५६]मैन ना ।
मुनिगण छोड़ल धेआन ना ।
शीवदत्त पद भान ना ॥१९॥

नृप मदन[५७] जग देल [५८]परवेश ।
कठिन[27] तप जहाँ कएल महेश ॥
बान[५९] कमान फूल कर सोभ ।
देखि सुर-मुनि-मन उपजल लोभ ॥
मदन चलैत बह शितल[28] समीर ।
उमग भरल पशु, भुतक शरीर ॥
शङ्कर हृदय मदन शर लागि ।
तेसर नैन[६०] हर उधेरल आगि ॥
बान लगैत तन[६१] उपजल पीड़ ।
दहन कएल हर मदन शरीर ॥
मन गुनि कवि शिवदत्त पद भान ।
टूटल अब शिवशङ्कर ध्यान ॥२०॥

५३ - कामदेव । ५४ - देवता । ५५ - मरणशील मनुष्य । ५६ - मदन (कामदेव) ५७ - कामदेव । ५८ - प्रवेश । ५९ - बाण ओ धनुषक रूप मे फूल । ६० - नयन (आँखि) । ६१ - शरीर मे ।

25—निरसौं । 26 —पीड़ा ।
27 - कठिन । 28 - शीतल ।



मन नहि रहल अधीन [६२]मदन-वश टूटल शिवक समाधि ।
मन मनमथ[६३] अति जागल, की फल जोग अराधि ॥
छन छन लुबुध मुगुध मन, बैसल अहोनिशि जागि ।
कोन तप तह धनि पाओब, विकल ताहि मन लागि ॥
भोजन शैन[६४] सकल शिव छोड़ल, बिरह परम दुख देल ।
रहत चैन न सैन, मन बाकुल, एहन सदाशिव भेल ॥
हरि आएल संग सहित बिधाता, मुगुध[६५] महादेव पास ।
शीवदत्त भन हर सरनागत, पुरह हमर मन आस ॥२१॥

कहय लागल हर, हरि[६६] अनुमानि ।
हरि हरि कोन परि पाओब भवानि ॥
मन नहि चैन होएत मो[६७] ताव[६८] ।
गौरिक बदन देखए नहि जाव[६९] ॥
देव सकल मिलि कर परिहास ।
की फल मन कय एतेक उदास ॥
भल हर भल शिव भल वेवहार ।
जप तप दुरि गेल मदन बिकार ॥
कय परिहास बोलल हरि बानी ।
[७०]दिढ़ मन करिअ सुनिअ सुलपाणी[७१] ॥
नारद मुनि बजाबिअ आजे ।
तोरित पठाबिअ हेमत समाजे ॥
हरिक बचन शिव सुनल काने ।
मन गुनि शीवदत्त पद भाने ॥२२॥

सुमरल सखन बचन हर मुनि ।
तोरित बोलायल[30] नारद मूनि ॥

६२—कामदेवक वश । ६३—कामदेव । ६४—शयन । ६५—मुग्ध (आश्चर्यित)। ६६—विष्णुकें । ६७—हमरा । ६८—तावत् । ६९—यावत् । ७०—दृढ़ (स्थिर)। ७१—शूलपाणि (महादेव) ।

30—ओ लायल ।

आए महामुनि देल परवेस ।
पथ हेरइते[७२] जहाँ बैसल महेश ॥
आसन देल सिंहासन लाय ।
[७३]निज कर पाओ[७४] पखारल आय ॥
अति आदर कय प्रेम बढ़ाय ।
निज अभिमत शिव कहल बुझाय ॥
मदन[७५] पराभव कहइत लाजे ।
जाहु तोरित मुनि हेमत[७६]-समाजे ॥
हेमगिरि-कुमरि गौरी भवानि ।
तोरित माँगि देहु मोहि आनि ॥
सुनल वचन मुनि कएल [७७]पयान ।
मन गुनि शीवदत्त पद भान ॥२३॥

[1]आकुलि भय भेल [७८]रति परवेश ।
रोदन करय शिर फूजल केश ॥
कहु कहु शङ्कर कि कएल से तोर ।
बिनु दोख [७९]नाह हरल भेल मोर ॥
कोन परि जनम बितत शिव मोर ।
तोहु किए भेलाहु निपट[८०] कठोर[2] ॥
रोदन सुनि कहोइ गरुड़ गामि[८१] ।
धैरज धय रहु मिलत सोआमि[८२] ॥
रुकुमिनि कोखि[८३] अवतरत तोर नाह ।
तन्हितह होएत तोहर निरवाह ॥
शीवदत्त हरि परसन[८४] भेल ।
धैरज बहुत रती कें देल ॥२४॥

७२ – तकैत । ७३—अपना हाथें । ७४ – पएर । ७५ – कामदेवक विपत्ति ।
७६ – हिमलयक ओहिठाम । ७७ – प्रस्थान ।
७८—कामदेवक स्त्री । ७९—स्वामी । ८०—अत्यंत । ८१ – विष्णु । ८२ – स्वामी । ८३ – कोखि = कुक्षि = पेट । ८४ – प्रसन्न ।

1—अति आकुलि भय रति । —2निपटक रुखो ।



तोरित निकट घटक मुनि गेल ।
हेमत समादर बैसक देल ॥
नारद परम समादर जानि ।
तखन महामुनि बिरचलि बानि ॥
मोहि महादेव भेजल आज ।
तैं रिषि[31] अएलहुँ तोहर समाज ॥
तुअ नन्दिनि[८५] वर आदि भवानि ।
करत बिवाह देव सुलपानि[८६] ॥
गौरिक भाग परम कय जानि ॥
[८७]दिढ़ मन करिअ कहिअ मोहि बानि ॥
त्रिभुवनपति[32] शिव के नहि जान,
गौरिवर एहन दोसर नहि आन ॥
[८८]रिषि ! तप एहन कहल नहि जाय,
[८९]अकलेस [९०]उपगत एहन जमाय ॥
हाथ धरिअ मोर करिअ न आन,
आनक वचन सुनिअ नहि कान ॥
लागल कहए हेमत रिषि बानी,
शीवदत्त भन मन अनुमानी ॥२५॥

शिव-मन भेल अनुराग, भाग कै जानल ।
मुनि मन परम हुलास, वचन दिढ़ि मानल ॥
गौरि तपोवन जाय, कठिन व्रत साधल ।
त्रिभुवनपति शिव जानि, भवानि अराधल ॥

८५—पुत्री । ८६ – शूलपाणि (महादेव) । ८७ – दृढ़ (स्थिर) ।
८८—राजर्षि हिमालय । ८९—बिनु क्लेशहि । ९०—प्राप्त ।

31— – रिखि ऐलहु ।
32 – त्रुभुवन ।

धन्य हम रिखि कि गौरि चरन शिव[६१] देखती ।
जनम जीवन ततकाल, सुफल कए लेखतौं ।।
करब गौरिवर सङ्कर, ई मन कएल ।
घटना भेल सब थीर, हाथ नहिं धएल ।।
नारद कएल पयान[६२] तोरित उठि तहिखन ।
शीवदत्त पद भान, पुरहु शिव मोर मन ।।२६।।

नारद घटक निकट चल आब ।
परसन[33] कय मन कहए जो आब ।।
ऋषि हेमत घर कन्या कुमारि ।
सम्मति थिर[६३] भेल वर [34]त्रिपुरारि ।।
[1]सङ्कर सुनल मुनिक सब बात ।
तहिखन साजल हर बरिआत ।।
[35]शीवदत्त भन सुमरि भवानि ।
देहु सरन सरनागत जानि ।।२७।।

[६४]हरषि हर बरिआत साजल भूत, दानव ठाट रे ।
[६६]ब्याल-जाल [६७]कराल साजल चलत पाव नहिं बाट रे ।।
रुण्ड-मुण्ड तनु भसम राजित वसन[६८] बाघहिं छाल रे ।।
वरद पिठि असवार सङ्कर बाजन बाजत गाल रे ।।

६१—शिवक चरण । ६२—प्रस्थान । ६३ —स्थिर ।
६४—प्रसन्न भए । ६६ - साँपक समूह । ६७ - भयङ्कर । ६८ - वस्त्र ।

1—तोरित कहहु गए रिखि सओं बात । ओतहु साजय आब हर बरिआत ।
शीवदत्त भन सुमरि भवानि । गौरि उचित वर देल सुलपानि ।।
—(गौरीसंवर) ।

३३ - परस कै । ३४ - त्रिपुरारि । ३५ - शिवदत्त ।



चन्द्र-तिलक ललाट सुन्दर वदन सोभे तिनि आँखि रे ।
नगर निकट बरिआत लागल बैसलि सखिगन आँखि रे ।।
शीवदत्त[1] भन चरन मन दय, छवि बरन[36] के पार रे ।
सेस-नागहु कौं[37] कठिन थिक, जेहो[38] मुखक हजार रे ।।२८।।

हरन भेल सखि ! हेमत गेआन ।
खोजल निरधन पुरुष पुरान ।।
एहि जग वर की भेटल न आन ।
देखितैं [६९]मनाइनि तेजति परान ।।
गौरि हमर छथि अति सुकुमारि ।
तनिका एहन वर तपसि भिखारि ।।
हर बरिआत कहए के पार ।
किएहु[39] लिखल [1]विहि गौर कपार ।।
भन गुनि शीवदत्त[40] पद भान ।
हर परमेश्वर के नहिं जान ।।२९।।

[२]बरिआत दआर जब लागल, देखल हेमत [२]क्षिति-रानी ।
जीवन जनम अपन परिजन सन, सकल अकारथ[३] जानी ।।
नृपति विवेक बुझल हम तहिखन, लयलाह तपसि भिखारी ।
बुढ़ दिगम्बर के कर एहन वर हमे घर एक दुलारी ।।

1 = शीवदत्त भन चरन मन दय इहओ बानी गाव रे ।
मोहन ज्ञान न करिअ अधमे, हर वर भागहि पाव रे ।।
— गौरीसंवर ।

६९ —मयना (हिमाचल क पत्नी) । १ —विधि (ब्रह्मा) । २ —मयना गौरीक माय) । ३ —व्यर्थ ।

1—धन सम्पति सब भसमक ढेरि ।
कौन परि जनम गमाउति गौरि ।। —गौरीसंवर । (अधिक) ।
36 - बरनब । 37 - नाग कौं बरन कठिन । 38 - जौं मुख थिक ।
39—कीदहु । 40—शिवदत्त ।

गौरि [१]कओरि[41] सम्हारस की लय, की देत भोजन ताहि ।
सुमरि [२]नीर भरि आओल लोचन, अब हम होएब बताहि ॥
शीवदत्त[42] भन धैरज धरु, मन हर बर त्रिभुवन दानी ।
कठिन योग व्रत साधि उचित वर, पाओल आदि-भवानी ॥३०॥

हम न करब वर बूढ़ हे राजा ॥ध्रु०॥
तीनि भुवन फिरि वर जोहि[३] आनल, जाहि दोषन[४] सभ गूढ़ ॥
एहि तह उचित मरन मोर सुन्दर कतेक सहब मन पीर[५] ।
राजकुमारि भिखारि बिआहत, सुमरि नैन ढर नीर ॥
देखि नगन वर नगर सगर हँस, की देत उत्तर ताहि ।
हिअ[६] मोर साल[७] गौरि मुख देखि-देखि, अब हम होएब बताहि ॥
अति सुन्दर हम करब गौरि वर, पुछल मनोरथ मोर ।
सबतहु नारि विचारि करए वर, तोहू किए भेलाहु कठोर ॥
नव सुन्दर सुकुमार प्रथम वर, करब गौरिवर जोहि ।
से सभ मनोरथ मनहि मगन भेल, क्यों नहि परिजन मोहि ॥
अति सुकुमारि दुलारि मोहि घर, एक दोसर नहि धीक ।
अति निर्मोह[८] तोहि जग कहतहु, किए न कएल वर नीक ॥
जगत अनाथक नाथ सदाशिव, शीवदत्त भन जानि ।
तोरित हमर मन पुरहु सदय भय, शङ्कर-सहित भवानि ॥३१॥

सुनिअ मनाइनि कहु गिरिराजे ।
बड़े तपे पाओल शिवक समाजे ॥
अशरन-शरन अनाथक नाथे ।
से हर परसन, भेलहु सनाथे ॥

१—कौड़ी । २ - जल (नीर) ।

३—ताकि कए (खोजि) । ४—दोष (अवगुण) ५— दुःख । ६ - हृदय । ७ - पीड़ित करैछ । ८ - निष्ठुर ।

41 - गौरिक औरि सम्भारस । 42 - शिवदत्त ।



सकल [७]अमर-पतिदेव [८]शुलपाणी ।
जे देखि वरलन्हि आदिभवानी ॥
जगत-तात[९] हर, गौरि जग[१०]-माय ।
के कहु महिमा कहलो न जाय ॥
ई सभ कहि ऋषि बानि बुझावे ।
गौरि उचित वर शङ्कर पावे ॥
शीवदत्त भन वर नहि आने ।
हर परमेश्वर के नहि जाने ॥३२॥

असक[१०] परलि गिरिरानी ।
मानल वर शुलपानी ॥
तिरहुति-रिति मनमानी ।
बूढ़ वर कर बटु[११] जानी ॥
मैथिल लौकिक देखी ।
निअ[१] मन रोख[२] उपेखी[३] ।
शीवदत्त पद भाने ॥
हर मोर राखहु माने ॥३३॥
परिछए चलल सखीगन ।
फनि-मनि[४] जोति धरय तन ॥
छगुति रहलि सखि निअ मन ।
कौतुक करत भूतगन ॥
कतन[५] जतन सखि आवय ।
नाक धरय नहि पावय ॥

७ - देवताक पति । ८ - शूलपाणि (महादेव) । ९ - पिता । १० - बेवश ११ - बच्चा ।

१—निज (अपन) । २—तामस । ३ - उपेक्षा कयल । ४ - नागक मणि । ५ - कतेक ।

सखि चललि सखि निज घर।
कोन परि परिछब हर बर ॥
शीवदत्त इहो पद भन[1] ।
तोरित पुरह शिब मोर मन ॥३४॥

हेमगिरि[२] बचन मनाइनि[३], निज मन मानल ।
गेल सखी सब साथ, नाक धरि आनल ॥
सखिगन मड़ब[४] घमाय, उखरि लग राखल ।
वैदिक विप्र[५] अनाय, सबहु वेद भाखल ॥
कुदए अठोङ्कर साथ, आङ्गन आएल ।
कर लय पत्र रसालक[६], नारि झुलाएल[७] ॥
दधि अक्षत तसु डारि, पीत सूत आनल ।
दुलहि दुलह कर लाय, कंगन तब बान्धल ॥
शीवदत्त पद भान शिवक मन भाओल ।
गौरि उचित बर पाय, सखी समुझाओल[43] ॥३५॥

चलल कोबर शिवशंकर, गिरिजा[44] जहँ बैसलि ।
रोकल सार दोआर, सखीगन हँसलि ॥
देहु तोरित घर जाय, देखब हम हे हरि ।
[45]शुभ लगन बिति[46] जाय, छाड़ि देहु [८]देहरि ।
की विधि देल शिव मोहि, कहल इह गिरिसुत[९] ।
बिनु देले घर जायब, धिकहुँ ककर पूत ॥

२—हिमालय। ३—मयना! ४—मड़बा (मण्डप)। ५—ब्राह्मण।
६—आमक। ७—झुक कयल। ८—घरक दोआरि।

1— शीवदत्त इहो पद भन।
कुदत अठोङ्कर भूतगन ॥ —गौरी संवर।

43—ओज। 44 – गिरिनन्दिनि जहाँ। 45 – भूत। 46 – बीति।



ई सुनि बासुकि नाग, हरक शिर जागल।
देखि डर छोड़ल दोआर, हेमत-सुत[१०] भागल ॥
शीवदत्त पद भान, आन नहि मोर गति ।
तोरित पुरह मन मोर, देहु बर पशुपति ॥३६॥

सखि इस मंगल अलापल ।
लय कन्या पद झोंपल[1] ॥
दुइ कुमारि बैसलि घर ।
गौरी घरय चलल हर ॥
अंगुरि गहिय लेल सङ्कर।
गौरी नाहि [47]पड़लि कर ॥
माइनि देखि देखि हँसय ।
कहँसा इहो बर बसय[2] ॥
हरषित भेल दिगम्बर ।
[११]पुलकि [१२]गहल शिव [48]गौरि कर ॥
[49]शीवदत्त कवि गाओल ।
[50]गौरि उचित बर पाओल ॥३७॥

पुलकि[१३] दिगम्बर, गहि लेल[3] गौरि कर हे ।
आगे माइ, गौरि लेल अंगुरी लगाय,
चलल शिवशंकर हे[4] ॥

९—मैनाक। १०—मैनाक। ११—आनन्दित भय। १२—पकड़ल।
१३—प्रसन्न भय।

1 – (गौरीशंकर सँ दू पाँती लेल गेल।) । 2– अपदेस हर' बर—गौरीसंवर।
3—धैल। 4 – (एहि सँ आगू मओ पाँती गौरीसंवरक थिक।)
47 – पहिल। 48 – गौरी। 49 – शिवदत्त। 50 – गौरी।

[पुलकित भेलि तन जतबे सखिगन हे ।
आगे माइ अदभुत रूप अनूप,
सोभए तन हर बर हे ॥
बसन बाघरि छाल गले सोभए मुण्डमाल हे ।
आगे माइ सिर सोभए सुरसरि धार,
फनि मनि ऊपर हे ॥
गहि लेल गौरि कर चलल मंड़ब पर हे ।
आगे माइ शीवदत्त कवि भान,
ध्यान हर ऊपर हे ॥]

रुण्डमाल१४ कर, चलत जपत हर हे ।
आगे माइ, झलकत तिलक अपार
१५बाल-शशि भालक हे ॥
डढ़ा शोभ भुज डोरी, भोजन विष घोरी हे ।
आगे माइ परिहन गज१६ केर चाम,
नाम थिक पशुपति हे ॥
शीवदत्त भन तोरित१७ पुरहु मन हे ।
आगे माइ शिव[51] छोड़ि गति नहि आन
ध्यान मोर लागल हे ॥३८॥

कहु कहु शंकर की गोत१८ तोर ।
ऋषि गोत जएह सएह गोत मोर ॥
कोन परि होएत तकर निरवाह ।
१९समगोत कतहु न होअए विवाह ॥

१४ – रुद्राक्षक माला । १५ - द्वितीयाक चन्द्रमा कपार परक ।
१६ = हाथी । १७ - शीघ्र । १८—गोत्र । १९—समगोत्र ।

51 = शिव तुअ छोड़ि ।



जकरा घर थिक बाप न माय ।
से कोन गोत तोहि [52]कहत बुझाय ॥
[1]हरि सम्मति लय गोत एक भेल ।
आइन ऊपर तखन हर गेल ॥
शीवदत्त भन मन अनुमानि ।
देहु शरन शरनागत जानि ॥३९॥

गुनमान पुरोहित आनल ।
झटपट वेद बखानल ॥
तीनि कुश ऋषि[53] कर लेल ।
वेद विहित गौरि शिव देल ॥
सखि सब मङ्गल गाओल ।
गौरि उचित वर पाओल ॥
शीवदत्त इहो पद भन ।
तोरित[54] पुरहु शिव मोर मन ॥४०॥

वेदी उपर चलल हर, गहि गौरि कर ।
फनि २०मनि उर २१लपटाएल, हँसए दिगम्बर ॥
नगरसँ सखिगण आइलि, बैसलि सभ मन झाँखि२२ ।
शेष नाग सिर जागल, २३आँजति के हर आँखि ॥
ब्रह्मा पोथी लय कर, भाखथि वेद विधान ।
हर मन एकओ न भाओल, पढ़थि आन सौं आन ॥
[2]अछर अछर समुझाओल, हर कएल शुद्ध उचार२४ ।
तील कुश लय हेमत, हरषि कएल कन्यादान ॥

२०—सापक मणि । २१—छाती मे । २२—पछताय । २३—काजर करत ।
२४—उच्चारण ।

1 - (इ दू पाँती गौरी शंकर सँ लेल गेल ।) 2—इ पाँती गौरीशंकर सँ लेल गेल ।
52—अ कहत । 53—ऋष । 54—तोरत ।

वेद पढ़ि लबा छिड़िआओल, मंगल भाखल ।
वासुकि सभ बुलि खाएल, एकओ न राखल ।।
शिवदत्त कवि गाओल, हर मन भाओल ।
गौरि उचित वर पाओल, सखि समुझाओल ।।४१।।

देखल विकल सकल मन भेला ।
हर निज रूप बदलि लब देला ।।
शङ्कर रूप जखन शिव भेला ।
सभ मन भेल चान्द उगि गेला ।।
कर नहि लेल शिव आदि - भवानी ।
लघु लघु चरन धरत शुलपानी[२५] ।।
हर वर देखि मनहि मुसुकानी ।
हरखित भेलि [२६]मनाइनि रानी ।।
मन गुनि शिवदत्त पद भाने ।
शंकर छोड़ि मोहि गति नहि आने ।।४२।।

अगर [२७]केसरि हाथ सखि दस, निकट गौरिक जाय हे ।
मंगल गाबि पसाहि [२८]गिरिजा, कोबर देल पहुँचाय हे ।।
सीस [२९]पट गौरि टारि राखल, भेल सगर इजोर हे ।
बिन्दु सिन्दुर भाल [३०]राजित, उगल सुर [३१]जनि भोर हे ।।
लेल कय सिर मांग-टीका, [३२]परम राजित गौरि हे ।
हर जटा मनिआर[३३] जागल, कितहुँ गेल मनि चोरि हे ।।
जोति आनन [३४]जगत पसारल, जगजोति भेल मलान हे ।
नयन हर [३५]सुर मलिन भय गेल, भाल मलिन भेल चान हे ।।

२५—महादेव । २६—गौरीक माय ।
२७-अगर ओ केसरि सुगन्धित द्रव्य । २८-प्रसाधित कय, सजाय । २९-माँथक वस्त्र । ३०-कपार पर । ३१-सूर, सूर्य । ३२-मनटीका, माँथक गहना । ३३-साप । ३४-मुँहक ज्योति । ३५-महादेवक आँखि मे रहनिहार देवता अग्नि ।

1—एतय सँ छओ पाँती गौरीसंकर सँ लेल गेल ।



चिकुर [३६]चामर ललित वेणी, मृगमद [३७]सोभय भाल हे ।
नाक बेसरि परम राजित, सोभए गले मनिमाल हे ।।
परम अनुपम साजि भूषण, बैसलि शिवसंग जाए हे ।
देखय आइलि रानि मनाइनि, हरख उर न समाए हे ।।
आदि भवानि जखन शंकर संगे, बैसलि कोबर जाए हे ।
शिवदत्त भन चरन हृदय धरि सोभा बरनि न जाए हे ।।४३।।
खीरि रान्हि दुइ थार भरल गए, सखि मन परम हुलास हे ।
चौक [३८]पुराय थार युग [३९]राखल, बाढ़ल तखन बिलास हे ।।
[४०]महुअक करय बैसलि गए तोरित, गिरिनन्दिनि शुलपानि हे ।
जौँ एक बापक पूत सदाशिव, तौँ मोर जितब भवानि हे ।।
गौरि गरास [४१]फेकल अब तोरित[४२], निजकर[४३] ते हलु सानि हे ।
बिहुसलि बदन निहारि सखीगन, जितल सखी मन जानि हे ।।
शिवदत्त भन चरन हृदय धरि, कोन गति जात बखानि हे ।
बिहुँसि बिहुँसि मोहि देहु अभय वर, शङ्कर सहित भवानि हे ।।४४।।

नोना [४४]तखनि बुलाइलि, [४५]चलि आइलि ।
जोगिनि जोग समारि, बहुत संग लाइलि ।।
कोबर जाय जगाय, तोरित हम मोहब ।
हर होएत गौरिक दास, तखन किछु कहब ।।
जोगिनि जोग लगाओल, देखल दिगम्बर ।
तेजल शङ्कर रूप, भयंकर भेष धर ।।
मुण्डमाल बघछाल, जटा सिर फूजल ।
डमरुल [४६]सुरसरि धार, अंग भूमि भीजल ।।

३६-केश । ३७-कस्तूरी ।
३८-ठाओँ कय । ३९-दुइ गोट थारी । ४०-वर-कन्याक भोजन सम्बन्धी विधि । ४१-कओर । ४२-शीघ्र । ४३-अपना हाथेँ ।
४४—नोना नामक योगिनी । ४५—आबिकेँ मिलल । ४६—गंगाक धार ।

फनिपति कर फुफुकार, हरक उर जागल ।
जोगिनि बैसलि हिय हारि, जोग नहि लागल ।।
दुखमोचन तुअ नाम, शोरित दुख हरह ।
शीवदत्त पद भान, हमर मन पुरह ।।४५।।

देखल वरक सरूप, डरलि सभ माइनि ।
[४७]झाँखि जोगिनि मुख हेरल, रानि मनाइनि ।।
मोहित करब जमाय, हमर मन मानल ।
हर होएत गौरिक दास, जोगिनि हम आनल ।।
[४८]बस करि सभतह आय, जतेक दुरि बुलली ।
देखि डर हमर जमाय, सकल जोग भुलली ।।
जोगा रहलि डराय, जोगबल हारल ।
बैसि सखीगन आए, सबहु हिअ हारल ।
शीवदत्त पद भान, चरन शिव चित धरि ।
कहल वचन एक गौरि, विनति शिव कर जोड़ि ।।४६।।

[४९]रहसि बोललि गौरि आजे ।
[५०]छपि कहु शिवक समाजे ।।
तुअ गति बुझय न पारी ।
ई सभ नारि गमारी ।।
झाँखि बैसलि सभे नारी ।
सखी सकल हिय हारी ।।
सुन्दर रूप देखाय ।
पुरिअ सकल मन आय ।।
तब तेज [५१]विकट सरूपे ।
फेरि भेल शङ्कर [५२]रूपे ।।

४७—पछताय । ४८—अपना अधीन कय । ५२ - भद्र रूप ।
४९—एकान्त मे । ५०—नुकाय कें । ५१—त्यागल ।



देखि हरखलि सभ नारी ।
हर संग राजकुमारी ।।
शीवदत्त पद भाने ।
राखि लेहु मोर माने ।।४७।।

नगरक नारि हकारि अनाओल, देखय शिवक परिहासे ।
बैसलि राजकुमारि शिवक संग, सखि मन बाढ़ हुलासे ।।
कोबर गौरि संग शंकर बैसल, परम सोहाओन लागे ।
देखि हरषित भेलि रानि मनाइनि, जानि अपन बड़ भागे ।।
देखि सरूप काम [५३]कोटि लज्जित, शोभा बरनि न जाय ।
निरखि सखी मन हरष जुड़ायल, सखि सुन्दर पति पाय ।।
शीवदत्त भन चरन हृदय धरि, छवि बरनय के पार ।
[५४]उमगि सखी सभ प्रेम बढ़ाबए, करि करि जतन हजार ।।४८।।

चलु देखू कोबर सुख जाय कए ।
सखिगन गाबय मधुर धुनि मंगल, शिवक चरन मनाय कए ।।
कौशल चालि चलत शिवशङ्कर, सुन्दर सीस [५५]नवाय कए ।
हरखित चरन धरत धरणी पर, गिरिनन्दनि संग जाय कए ।।
पाँच बदन तिनि नयन विराजित, ससि [५६]सिर तिलक बनाय कए ।
कय परिहास आस मन पूरह, सखि मन प्रेम बढ़ाय कए ।।
तोहर चरण सेवि ई गति हमर, तें मन रहिअ लजाय कए ।
शीवदत्त भन हर शरनागत, मोहि उबारह आय कए ।।४९।।
चलु देखू जनौआ [५७]चोरी ।
कय परिहास सखीगन आइलि, बैसलि शिवक संग गोरी ।।
दुलहिनि गाढ़ [५८]मुठी कय बैसलि, हसलि सखी मुख मोरी ।
उप [५९]उपवीत गौरि कर आएल, बलसँ ने हर [६०]अछोरी ।।

५३ - करोड़ो कामदेव । ५४ - आनन्दित भय । ५५ - माँथ झुकाय ।
५६ - माँथ पर चन्द्रमाकें । ५७—वरक छाड़ल जनउक चोरएबाक विधि ।
५८—मुट्ठी कसि । ५९ — छाड़ल जनउ ।

देखि परिहास दुहु मन हरषित, हर-गिरिराजकिशोरी।
शोभा एहन बखानि सकत के, सभ उपमा नहि थोरी ॥
शङ्कर दीनदयाल सदय भय तोरित पुरहु मन मोरी।
शीवदत्त भन चरन हृदय धरि, हम सरनागत तोरी ॥५०॥

वर देखन सखीगन आऊ।
निअ [६१]कर मुन्दरी पलंग पर छोड़ति, हँसि हँसि रंग[६२] लगाउ ॥
निअ तनु गारि देति सभ सखिअन, हर नव प्रेम बढ़ाऊ।
सभ सखि विविध कुसुम केर माला अपने हाथ बनाऊ।
कय परिहास गौरि शङ्कर सँ, दुहु दुहु हुनि पहिराऊ।
शीवदत्त भन चरन हृदय धरि, कोवर मंगल गाऊ ॥५१॥
गौरी शंकर आनि वैसाओल, चानन चरन उञ्जारि।
छीनि [६३]समारि हाथ करि दिन्हो, वचन सुनिअ [६४]नृप नारि ॥
एकर भेड़ [६५]बनाविअ शङ्कर, नहि तँ सखी देति गारि।
तेहि रुपे भेड़ बनाय सदाशिव, देल जीव तहि डारि ॥
उछिलि उछिलि भेड़ रंग लगावत, हुलल सखीगन झारि।
हर मन प्रेम उमग जब बाढ़ल, देखल सकल सभ नारि ॥
[६६]परसनि भय देवि ! देहु अभय वर, हेमगिरिराजकुमारि।
शीवदत्त भन चरन हृदय धरि, शङ्कर लेहु उबारि ॥५२॥

॥ समाप्त ॥

---

६०—महादेव जोड़ लगाइयो कें मुट्ठी नहि खोलि सकलाह।
६१—अपन हाथक मुद्रिका (औंठी)। ६२—विलास लीला।
६३—जर्जर कपड़ा समेटि कय शंकरक हाथ मे देल। ६४—राजा हिमालयक पुत्रीक वचन सुनू। ६५—भेंड़ा। ६६—प्रसन्न।



# गौरीप्रणयक परिशिष्ट

कवि शिवदत्तकृत

## १—गौरीसंवर (गीतकाव्य)

ई गौरीविवाह-सम्बन्धी १५ गोट गीतक क्रमबद्ध संग्रह थिक। एहि मे केवल चारि गोट गीत छोड़ि सकल गीत गौरीप्रणय नाटकेक थिक। अतः एतय केवल चारिये टा गीत प्रस्तुत अछि। शेष गीत नाटके मे अछि। सभक विवरण प्रस्तुत अछि:—

| गौरीसंवर गीतसं० | गौरीप्रणय गीतसं० |
|---|---|
| १ | ६ सँ ११ धरिक भाव |
| २ | १२ सँ १६ धरिक भाव |
| ३ | २० (समान) |
| ४ | २४ (समान) |
| ५ | २७ (समान) |
| ६ | २८ (समान) |
| ७ | २९ " |
| ८ | ३४ " |
| ९ | ३६ " |
| १० | ३७ " |
| ११ | ३८ " |
| १२ | ४१ " |
| १३ | × (अभाव) |
| १४ | ४३ (समान) |
| १५ | ४४ एवं ४५ (भाव) |

प्रस्तुत गीत मे गौरीसंवरक संख्या देल अछि। शेषगीतक पाठान्तर नाटके मे यथास्थान निर्दिष्ट अछि॥

१

मृगछाल माल लय चलनि सुन्दरि, बैसलि जाए मसान रे।
शिवशंकर एहि जगत पाबिय, मन करिय इहे ध्यान रे॥
कठिन तप कयल बरख बारह, बीहि [1]परसन भेल रे।
अति भयङ्कर देव शङ्कर, आए दरसन देल रे॥
बिहुँसि शङ्कर बचन बोलय, देत मन बहलाय रे।
कुल-मुल परिजन एको न थिकइन्हि, कोन गुन करब जमाय रे॥
बूड़ दोख सभ गूढ़ [2]थिकइन्हि, बसथि सतत मसान रे।
हरक निन्दा सुनि गिरिजा, तेजय चाह परान रे॥
परम रोषित गौरि मन भेल, कहय सखि-मुख हेरि रे।
कहाँ सँ आएल बिकट जोगी, कहहु जाओ गृह फेरि रे॥
बचन सुनि हर बिहुँसि बोलय, शङ्कर थिक मोर नाम रे।
ऊठि निजगृह जाहु सुन्दरि, पुरत सभ मनकाम रे॥
हर बचन सुनि तोरित ऊठि, पुलकि [3]चललि भवानि रे।
चरन। मन दय इहो उबरत, शीवदत्त कवि बानि रे॥१॥

२

गंग [4]नीर सरीर भीजल, भाल भसम त्रिपुण्ड रे।
धएल ध्यान मसान शंकर, कर माला लय मुण्ड रे॥
सकल देव [5]मत साधि आएल, हरि [6]सौं कएल विचार रे।
बैसल सपवन हर दिगम्बर, ध्यान तोड़ए के पार रे॥
सेवक नन्दी भसम लाबथि, दूत भूत सभ सङ्ग रे।
भाँग धूथुर आक भोजन, व्याल [7]भूषित अङ्ग रे॥

१—बिधाता प्रसन्न भेलाह। २—गुप्त दोष सभ छनि ओ वृद्ध छथि।
३—प्रसन्न भय। ४—गंगाक जल सँ। ५—सभ देवता एक मत कय।
६—विष्णु सँ। ७—साप सँ सजाओल।

१—हर चरन मन।



'अवधारि मन हरि' बचन बोलथ, मदन [10]सर जौं लाग रे।
तीनि दृग [11]हर उबेरि [12]राखब, तेहि परि से जाग रे॥
देव सभ हरिवचन मानल, बीड़ [13]सम्मति कीन्ह रे।
ब्रह्माक [14]सुत दूत हरि भेजल, मदन [15]जान तब दीन्ह रे॥
वचन सुनि [16]मने, तोरित ऊठल, चलल मदन दल साजि रे।
शिवदत्त भन दल जे आएल, तन [17]तन मदन बिराजि रे॥२॥

३

साजि देल गोरि कर, चलल दिगम्बर हे।
आगे माइ, सखि देल सिन्दुर धार, चलल हर कोबर हे।
भाल तिलक [18]सोभे, कोटि [19]काम मोहे हे।
आगे माइ, चान [20]अरुन छपि जाए, चलल शिवशंकर हे।।
पुरुष [21]पुरन्दर, देखइत सुन्दर हे।
आगे माइ, गले सोभे रुण्डमाल, बाघ छाल ऊपर हे॥
गोरि पटम्बर, [22]हर कौ बघम्बर हे।
आगे माइ, गेठ [23]जोड़ि चललि भवानि, हँसय सभ सखिगन हे।
शीवदत्त भन, हर पद धए मन हे।
आगे माइ, पुरहु मनोरथ मोर, कि हरखि दिगम्बर हे॥३॥

४

महुअक करय गोरि[24] हर, से बर घर हे।
सखि दश जोग [25]बताओल, हँसय दिगम्बर॥

८—विचारि। ९—विष्णु। १०—कामदेवक बाण। ११—आँखि।
१२—खोलि। १३—निश्चित। १४—नारद केँ। १५—कामदेव।
१६—ध्यान सँ सुनि। १७—सभक देह मे। १८—चन्द्रमा तिलकक रूपमे।
१९—कड़ोरो कामदेव केँ। २०—चन्द्रमा ओ सूर्य दबि जाइत छथि।
२१—श्रेष्ठ पुरुष, पुरुष मे इन्द्रस्वरूप। २२—रेशमी वस्त्र। २३—बन्धन (पुरुषक वस्त्र स्त्रीक साड़ीक खूँट मे बान्हि)। २४—गौरी ओ महादेव। २५—गीत विशेष।

देखि देखि झूरि [26]मनाइनि, सभ गाइनि हे ।
सभ मिलि हृदय बिचारि, दुल्हु [27]दुखपाइनि ॥
छाड़ि [28]गौरि उपेखल, बिष भखल[29] हे ।
आँग धएलनि शिव गाल, सखी दस देखल ॥
धैरज धरहु सखी मन, जाएब कामक देस हे ।
जब जोग [30]हम परगासब, मोहित होएत महेस ॥
नोना हमर नाम थिक, एहि जग के नहि जान हे ।
गौरिके देब सोहाग, कि शिव कह, [31]बर गेआन ॥
जोगिनि कतेक जतन कय जोग परगासल हे ।
हर नहि भेल जोग बस, एकओ न लागल ॥
शीवदत्त कवि गाओल, हरखित लाओल हे ।
गौरि उचित बर पाओल, मंगल गाओल ॥

---

२६—अतिदुखी । २७—गौरी दुख पओलीह । २८—शंकर ओ गौरिक उपेक्षा कयल । २९—भक्षण कयल । ३०—तान्त्रिक प्रयोग । ३१—शिव कहथिन जे गौरी बड़ ज्ञानी छथि ॥



श्रीः

परिशिष्ट

२

कवि शिवदत्त कृत

# सीता-संवर

( खण्डकाव्य )

सम्पादक

डॉ० शशिनाथ झा विद्यावाचस्पति



कामेश्वरसिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालयः, दरभङ्गा

श्री:

कवि शिवदत्तकृत

# सीतासंवर

प्रथमहि प्रनमि सरस्वति माता, एकर करहु निवाहु ।
शीवदत्त कवि ऊचर वानी, सीताराम विवाहु ॥१॥
सेवक जन पालक, सोभित ससि, कालक हरन गनेस ।
ललित दन्त गुनमन्त सन्त मोहि, देहु सुमति उपदेस हे ॥२॥
मैथिल देस नरेस जनक ऋषि, शङ्कर सेवा किन्ह ।
देखि शङ्कर मन हरख उपजल, नृपति सरासन दीन्ह ॥३॥
राखि सरासन जनक रीखि नृप, आप गए असनान ।
गृह पोतन गइ जानकि बारी, कर गहि राखिन बान ॥४॥
जनक रीखि गृह आए जे पहुँचल, मन मह हलल विचारि ।
कोन देसक भूपति गृह आएल, दियो सरासन टारि ॥५॥
विहुसि बोलहि तब जानकि बारी, सुनहु बबा मोर बात ।
हम उठाए चौका किआ, कि पूजा कारन तात ॥६॥
वचन सुनि मन तोरित उठल नृप, संमति पुरिनि जनाथ ।
चापि कर ते बान जे तोड़य, सो रतन कन्या पाब ॥७॥
सभा मण्डित पण्डितगन आएल, जनक कठिन प्रन किन्ह ।
पाती विरचि विरचि निरमाओल, दूत हाथ कए दीन्ह ॥८॥
लए पाता सभ देस देस गेल, नेओतल सकल संसार ।
त्रिभुवन पाताल जे नेओतल, स्वर्ग देवलोक झारि ॥९॥

३—सरासन = धनुष । ४—पोतन = लीपब । ५—बारी = बालिका ।
६—चौका = ठाओ (गौरीप्रणय गीत-४४) । ७—चापि = धनुष पर हाथ सँ । रतन कन्या = कन्यारत्न सीता । ८—प्रन = प्रतिज्ञा । पाती = पाता, चीठी ।

भुवन भुवन सभ राज जे नेओतल, गृह आएल दूतराज ।
एक देस दुज भूलि जे आएल, दसरथ नृप निज राज ॥१०॥
राम लछमन दुहु भैआ बैसल, पहुथि गुरुक थटि सार ।
सभ देशक सभ वीर जनकक पुर, दुहु मन करय विचार ॥११॥
राम लछमन दिढ़ संमति कय मन, गुरु सँ पुछल गए बात ।
हमहु जनकपुर देखन जाएब, जओं गुरु चलि मोर साथ ॥१२॥
विश्वामित्र बचन एक बोलय, मन दय सुनु मोर बात ।
दानव दैत्य वीरगन बैसत, परम होएत उतपात ॥१३॥
बिहुसि बोलहि दसरथसुत नन्दन, जनु गुरु मन हदिआए ।
सुर नर मुनि देव दानव दल पैसि, तोड़ब धनुष हम जाए ॥१४॥
पकर कठीन सरासन हरको, देखइत विकट सरूप ।
बैसक थोड़ कुसल तन देखइत, सहजहि बालक रूप ॥१५॥
परसुराम छत्री सभ मारल, से जग के नहि जान हे ।
सेहओ जनकपुर देखन अओताह के जन हरषित प्रान हे ॥१६॥
विश्वामित्र मन छोट न किजिए, आसिष दिअ मोहि आज हे ।
के वीर आज सरासन तोड़त, देखओ जनक रिषि राज हे ॥१७॥
कतेक जतन गुरु वचन तब मानल, चलल जनक रिषि धाम हे ।
विश्वामित्र लखन छोट चललाह, आओर चले श्रीराम हे ॥१८॥
दानव दैत्य नर नृपति सभ, धनुष देखि मन वाम हे ।
चलहु चलहु गुरु देखन जाउ, आज जनक रिखि धाम हे ॥१९॥
माथे मटुक तिलक बनमाला, तन दुति सुन्दर स्याम हे ।
लछुमन साथ चले रघुनन्दन, निरखत अति अभिराम हे ॥२०॥

१० - दुज = द्विज, थोड़ो लय बेनिहार ब्राह्मण । १२—दिढ़ = निश्चय ।
१४—दसरथसत = आनन्ददायक दसरथक पुत्र । १५—सरासन हर = महादेवक धनुषकें । को = के व्यक्ति । १९ - जनक रिखि = राजर्षि जनक मिथिलेश । २० - मटुक = मुकुट ।



आएल नगर निकट रघु-बान्धव, फुलवन लेल बिसराम हे ।
गौरि पुजन गृह सँ सिय निकसल देखल नयन भरि राम हे ॥२१॥
देखि कुमर सिय सखिमुख हेरय, धरति खसलि मुरछाय हे ।
तेहि तओं जिओं रघुवर वर पाऊ नहि तओ मरओ विष खाय हे ॥२२॥
सखि दुहु चानन हृदय लगाबए सितल सिचय नयन नीर हे ।
धैरज धरु मन जानकि बारी, नाह मिलत रघुवीर हे ॥२३॥
सखि मुख हेरि जानकि मुख बोलय, नहि सखि मन पतिआए हे ।
एतेक वीरगन हारि जे बैसल अलप वएस दुहु भाए हे ॥२४॥
सुमरि सुमरि कहु जानकि बारी, बैसल मन हिअ हारि हे ।
जओं नहि टुटल सरासन हरके, तओं हम रहब कुमारि हे ॥२५॥
तोहर बिबाह बीहि जओं लीखल, टूटत सरासन आज ।
सीतहि राम उचित वर भीलत, बाजन जनकपुर बाज ॥२६॥
राम लखन जब धनुष निकट गेल, हँसथि भूपतिगण साथ ।
मोट धनुष छोट कर बालक, अँटति कि गुन विधि हाथ ॥२७॥
चौदिस हेरि हेरि लखन कुमार बोल, सुनहु बबा मोर बात ।
चापि कर हम बान जे तोड़ब, हुकुम करिअ रघुनाथ ॥२८॥
मन गुनि बात बोलय रघुनन्दन, कोन पर होएत विवाह ।
जेठ रहैत बान जओं तोड़ब, तोहरे होएत विवाह ॥२९॥
दसरथ सुमरि, गुरु गुन गाओल, धनुष छुअल रघुनाथ ।
टुटल गर्व भूपतिगन सबहुक, धनुष कएल बस हाथ ॥३०॥
देखि जानकि मन हरख उपजल, अब पद छुटत कुमारि ।
टूटल धनुष मेदनि घहराइलि, सबद जगत परचारि ॥३१॥
डोलह इन्द्र इन्द्रासन डोलय बासुकि काप पताल ।
तीनि भुवन लोक कापन लागय, कापय दसओ दिगपाल ॥३२॥

२१ - तन दुति = शरीरक कान्ति । अभिराम = सुन्दर । २३ - नाह = स्वामी ।
२४ —अलप वएस = कम अवस्था । २५—सरासन = धनुष । २६—बीहि = विधाता । ३१—मेदनि घहराइलि = पृथ्वी शब्द कय उठलि ।

धनुष तोड़ि सभ बीर छोड़ाओल बाजन जनकपुर बाज ।
चलत अवधपुर दसरथ नन्दन राखि जनक रिखि लाज ।।३३।।
टूटल धनुष सुनि कोपित भय मन, तोरित आएल परसुराम ।
बार बार छत्रियगन सोधल, कहाँ सँ आएल श्रीराम ।।३४।।
फरसा लय कर मार मार बोलय, पहुँचल तोरित रोखाए ।
कटुक बचन पट भाखन लागय, लछुमन गेल अकुलाए ।।३५।।
हुकुम करिअ रघुनन्दन मो सओं ओहि मारब हम आज ।
छेमहु छेमहु कोप लछुमन भ्राता बोलय मुख महाराज ।।३६।।
विग्रह सुनि सुर मुनिगन आएल, लागल कहए विचार ।
रावन मारन शत्रुसंहारन राम लेल अवतार ।।३७।।
कोपित भए रघुनन्दन मन मन, रोकल स्वर्गक बास ।
मतिक छीन होइहह रघुबंधव लेव जबे बनवास ।।३८।।
जनक रीखि निजराज तेजि चललाह् रामचन्द्र महाराज ।
बिस्वामित्र लखन छोट चललाह, नीज अवधपुर राज ।।३९।।
गेल अवधपुर दसरथ-नन्दन दसरथे लेल चुमाए ।
निजसुत देखि मन हरख उपजल, पुलकि कौशल्या माए ।।४०।।
बदन निरखि जुगलोचन जुड़ाएल पुछए लागल सुन तात ।
कोन बिधि टूटल सरासन हरके, सकर कहहु किछु बात ।।४१।।
सुर नर देव दानवगन बैसल, धनुष छुबय नहि हाथ ।
हम तोड़ल सरासन हरके, तात धरम मोर साथ ।।४२।।
निजसुतवचन सुनल नृप दसरथ, हरखित मन मन भेल ।
जत तप पुरिब जनम हम कएले, एहन सुत विह देल ।।४३।।
दसरथ नृप बरिआत जे साजल चलल जनक रिखिराज ।
ऊधबधाव मंगल सभ गावए, बाजन चौदिस बाज ।।४४।।

३५—रोखाय = रोषित (क्रुद्ध भय) ।३७—विग्रह = झगड़ा ।
३९—नीज = अपन । ४०—चुमाए = चुमाओन कराय । ४३ विह = विधाता ।



बाजत मृदंग डंफ चंग सुर, तुरही अओ करताल ।
ढोलक मजीरा दोतारा सितारा, सारंगी कठताल ।।४५।।
कोटि कोटि दल बाजत नगारा, नकि-बे-हो कएल रनघात ।
कोसिल्या हिअ हरख जुड़ाएल, निरखि निरखि बरिआत ।।४६।।
कैओ कोटि हाथि पर हौदा, घोड़ गनय के पार ।
राम लखन साजल नृप दसरथ, साजल भरथ कुमार ।।४७।।
पीताम्बर मकराकृति कुण्डल, माथे मटुक बनमाल ।
तन दुति स्याम घटा घुमि आएल, जलधर लाओल जाल ।।४८।।
कमल नयन करकमल विराजित, चरनकमल अभिराम ।
हरखि हरखि पुनु रानि कोसिल्या, चलल चुमाबए राम ।।४९।।
लघु लघु चरन चलिय रघुनन्दन, चढ़ल रथ पर जाए ।
हीरा लाल जमाहिर लागल, सोभा बरनि न जाए ।।५०।।
नगर निकट बरिआत जे लागल, परिछय सखि सभ गेलि ।
निरखि सरूप रूप देखि लुबुधलि, मोहित सभ मन भेलि ।।५१।।
सिर सौं मटुक, जे काछ दबाओल, थ्रिम पटुका कर लेल ।
लघु लघु चरन देल रघुनन्दन, माड़ब भाउरि देल ।।५२।।
दसरथ—नन्दन त्रिभुवन-वन्दन, चलल सीस नवाए ।
कतेक जतन कय सीय उठाओल, देल अँगुरि लगाए ।।५३।।
दसन दामिनि जोति पसरल, आनन चान समान ।
चिकुर चामर ललित बेनी; भेस के जग जान ।।५४।।

४५—तुरही = पिपही । ४६—रनघात = उपयुक्त नगाड़ा पर चोट । ४७—घोड़ = घोड़ा । ४८—मकराकृति = माछक आकारक । तनदुति = देहक कान्ति सौं । घटा = मेघाडम्बर । जलधर = मेघ ।
५२—काछ दबाओल = दोपटाक एक छोड़ के काँखतर दाबि कय ? थ्रिम = गरदनि परक । पटुका = दोपटा । कर = हाथ सौं । भाउरि = घुमलाह ।
५४—दसन दामिनि = दाँतरूपी बिजुरी । चिकुर चामर = केशरूपी चँवर । ललित बेनी = सुन्दर जुट्टी ।।

कीर नासा अधर मधुरी, भृकुटि कुटिल कमान ।
प्रेम सरजुग बन्धलि विराजित, नयन सरोज समान ।।५५।।
पीन पयोधर उपर सुन्दर लङ्क केहरि समतूल ।
कदलि थम्भ जुग जंघ विराजित, चरन कमलक फूल ।।५६।।
कर कंगन, भुज टाड़ विराजित, मोतिनि माँग विराज ।
घन रवे घुघुरु नेपुर घन बाजय, कटि किंकिनि घन बाज ।।५७।।
परम राजित माँगटीका, मृगमद सोभे भाल ।
वेसरि बाजूबन्द विराजित, सोभित गले मनिमाल ।।५८।।
रचल पाति जड़वक टीका, जानकि के छवि छाज ।
सीता राम उचित जुग मीलल, बाजन चौदिस बाज ।।५९।।
अंगुरि लगाए चलल सिरि रघुबर जानकि जतन उठाए ।
सिन्दुर धार देल सभ सखिगन, सोभा वरनि न जाए ।।६०।।
कन्यादान कएल जे जनक रिखि, सुर नर मुनि भए साखि ।
रामचन्द्र हस्तोदक लए हलु, स्वस्तिवचन हलु भाखि ।।६१।।
ब्रह्मा पोथी लय कर बैसल, भाखथि वेदविधान ।
कर पर सिन्दुर जोति मलिन भेल, जब भेल सिन्दुरदान ।।६२।।
वेदी उपर गेल सिरि रघुबर, कर गहि लवा छिड़िआव ।
रती कामदेव युग मिलि आबथि, सेहओ रूप नहि पाब ।।६३।।

---

५५ - कीर नासा = सुगाक समान नाक । अधर = ठोर ।
भृकुटि कुटिल = टेढ़ भौंह । बन्धलि = शिरा, नस । सरोज = कमल ।
५६—पीन = पुष्ट । लङ्क = डाँर । केहरि = सिहक । कदलि = केराक ।।
५७—टाड़ = बाजूबन्द, ताड़ ।। ५८—राजित = शोभित । ५९—माँगटीका = माथक गहना मनटीका । मृगमद = कस्तुरी । भाल = कपाड़ पर । वेसरि = नाकक गहना ।। ५९—पाति = बाँहिक गहनाविशेष । जड़वक = .......... ।।
६१—जनक रिखि = राजर्षि जनक । साखि = साक्षी । हस्तोदक = हाथसँ हाथ मे जल दय दान करय । स्वस्तिवचन = स्वीकारोक्ति ।।
६३—रती = रति (कामदेवक स्त्री) । युग = जोड़ी ।।



तरुन पयोधर तन द्युति सुन्दर, सोभा अगम अपार ।
आगाँ ठाढ़ि दामिनि सम जानकि, बरनय के जग पार ।।६४।।
जानकि-राम ठाढ़ वेदी पर आभा एहन ई भेल ।
पाओस अमावस सघन निसि, चान किदहु उगि गेल ।।६५।।
सीता संवर पढ़ि जस भावत, मन दय जे जन गाव ।
शीवदत्त भन चरन हृदय धरि, भुक्ति मुक्ति वड़ पाव ।।६६।।

।। सीतासंवर समाप्त ।।

---

६५—पाओस = वर्षा ऋतुक । निसि = राति मे ।।

श्रीः

३

कवि शिवदत्त कृत

# दुर्गाविजय (गीतकाव्य)

[आदि सँ गीत सं०--२५क पूर्वार्ध धरि खण्डित गीत काव्य। दुर्गासप्तशतीक भावानुवाद। गीत सं० ३६ मे 'दुर्गाविजय' नामक उल्लेख। अन्तिम गीतक बाद मूल पोथी मे समाप्तिक चिह्न। प्रथम बेर प्रकाश मे आयल। ]

सम्पादक
डॉ० शशिनाथ झा विद्यावाचस्पति

... ... ... ... ...
... ... ... ... ...
... ... ... ... ...
... ... ... ... ...
... ... ... ... ...
... ... ... ... ...

पाँच वदन तिनि नैन विशाल[१]।
सुन्दर तिलक शोभए शशि भाल॥
शीवदत्त भन मन अनुमानि।
देहु शरन शरणागत जानि॥२५॥

१—मूल पोथी मे एहि सँ पहिलुका पत्र हेराय गेल छैक।



हरि निय शकति[1] तोरित लए आएल,
गरुड़क पिठि असवारी।
माथे मटुक तिलक बनमाला,
शोभए भुजा भल चारी॥
मणिमय मकर[2] मनोहर कुण्डल,
पीत बसन तनु श्यामा।
गदा पद्म कर शंख विराजित,
चक्र सुदर्शन नामा॥
कमल नयन कर कमल विराजित,
चरन कमल अभिरामा।
शीवदत्त भन चरन हृदय धरि,
पुरह हमर मन कामा॥२६॥

ब्रह्मशक्ति जे चढ़िय आइलि, हंसयुक्त विमान यो।
कमल आसन देखु सुन्दर, सोभए कुण्डल कान यो॥
चारि मुख तह वेद बाँचथि, पीत वसन बिराज यो।
कुश कमण्डलु दण्ड लय कर, चललि दैत्य—समाज यो॥
दृग लाल परम विशाल शोभित, मुकुट सुभग समारि यो।
भिचत जल रण फिरहि चौदिस, शोभए भुज भल चारि यो॥
शरण कए मन मोर सिरजल, जगत गति नहि जान यो।
काहि से मन विकल कएलह, शीवदत्त पद भान यो॥२७॥

आइलि रूप कौमारी।
षट्मुख हेरल निहारी॥
शिखि पिठि चढ़ि असवारी।
निज कर खड्ग उधारी॥

1—निय शकति = निज शक्ति। 2—मकर = माछ सनक सुन्दर।

युद्ध कएल अति भारी।
धरनए के जग पारी ॥
शिवदत्त हितकारी ।
तारिअ नेक निहारी ॥२८।

इन्द्रक शक्ति तुलाइलि रे चढ़लि गजराजे ।
नएन हजार निहारल रे रनभूमि समाजे ॥
बज्र अस्त्र कर सोभत रे देखु सुभग शरीरे ।
जलधर साजि चलल सङ रे जहाँ दानव धीरे ॥
सिर पर छत्र बिराजित रे गल मणिमय हारे ।
छिकि पुनु अमर सकल गति रे धरनए के पारे ॥
कए मन कोप चललि अब रे रनभूमि पयाने ।
भगवति चरन सरन धरि रे कवि शिवदत्त भाने ॥२९॥

नरहरि शक्ति चलल रन रे धरनए के पारे।
तीनि भुवन सभ जानत रे बल अगम अपारे ॥
आध सरीर केहरि रूप रे आधा नररूपे ।
देव सकल सभ दानव रे अद्भुत सरूपे ॥
देखल दसन भयानक रे नख परम बिशाले ।
चलत धरणि डगमग कर रे कापय दिगपाले ॥
कय बल दाप चललि अब रे रनभूमि पयाने ।
भगवति चरन सरन धरि रे कवि शिवदत्त भाने ॥३०॥

आइलि शक्ति बराह के रन, देखि गिरिसम देह ओ।
कण्ठ बाल बिशाल फरकत, चललि दानव-गेह ओ ॥
अस्त्र सकल सँभारि दौड़ल, घेरि दानव आए ओ ।
मारि युगल निकास के रन, देल दल बिहराए ओ ॥
भेल अब संग्राम भारी, बाजन चौदिस बाज ओ।
आएल सभ मिलि सकल दानव, रक्तबीज समाज ओ ॥



आए सकल समाज दानव, भेल सन्मुख ठाढ़ ओ।
अस्त्र वर्षा करहि जगपति, पड़ल दानव गाढ़ ओ ॥
अम्बिके गिरिराज नन्दनि ! तुअ चरन चित लाय ओ।
शिवदत्त मन पुरहु भगवति, तोरित होहु सहाय ओ ॥३१

रक्तबीज बिशाल अतिबल, आए घेरल अम्बिके दल,
उगहि दस अवतार खल-खल, देखि अचिरज हे ॥
कयल काली कोप अपारे, खलन महि नहि खसहत भारे,
चरन महि मह धरय न पारे, जग अधारे हे ॥
भेल सब हर प्रान काढ़ी, तासु उर पर भेलि ठाढ़ी,
भेल रन भरि रसन बाढ़ी, दशन काढ़ी हे ॥
तीख खड्ग उपाड़ि कर गहि, अम्बिके रन मारहि जहि जहि,
कालिके गहि धार तहि तहि रुधिर पीबहि हे ॥
अस्त्र दस कर लय समारल, तोरित दानव जाय मारल,
धार शोणित गिरय न पारल, अरि संहारल हे ॥
शिवदत्त भन चरन मन दय, आब किए देवि भेलिह निरदय,
लेहु तोरित उबारि मन दय, मोहि सदय भय हे ॥३२॥

दसबिध धरि अवतारे ॥
कयल युद्ध अपारे ॥
पिबय रुधिर गहि धारे।
भूमि पड़य नहि पारे ॥
रक्तबीज हनु मारी ।
कयल अमर हितकारी ॥
शिवदत्त पद भाने ।
तुअ छोड़ि गति नहि आने ॥३३॥

रक्तबीज रण मारल रे सुनल नृप शुम्भे।
तोरित गरजि रण आएल रे अब दैत्य निशुम्भे ॥

दार वरषत करइते रन रे पहु चल गए जाए ।
निज रूप तें शर कटइते रे देवी रन गह आए ॥
मारल गर्जि महासुर रे नहि भेल बिलम्बे ।
तीनि भुवन सभ हरषित रे जीतल जगदम्बे ॥
कए मन ध्यान जननि पद रे शिवदत्त पद गावे ।
तोरित अभय वर दय मोहि रे मन पुरह आवे ॥२४॥

परम भयानक दानव वीर ।
आएल शुम्भ महा रनधीर ॥
कए मन कोप चढ़ल रथ आज ।
कापए धरति सहित गिरिराज ॥
मद मातल भुज परम बिशाल ।
कोपित बदन नयन अतिलाल ॥
कहए महासुर सुनहु भवानि ।
अनके बल जितलह रन आनि ॥
शीवदत्त शरनागत जानि ।
तोरित मनोरथ पुरह भवानि ॥२५॥

गिरिनन्दिनि बोलल एक गोर ।
तीनि भुवन एक हमर शरीर ॥
सिंह चढ़लि एकसरि भेलि ठाढ़ि ।
गेल सरीर जगत भरि बाढ़ि ॥
भेल समेटि तखने सभ रूप ।
जोगिनि समाए गेलि रोमकूप ॥
एकसरि भय कर अस्त्र प्रहार ।
तखन युद्ध भेल अगम अपार ॥
मारि महासुर दानव भूप ।
खेलत रन महं आदिसरूप ॥
शीवदत्त मन सुमरि भवानि ।
देहु सरन शरणागत जानि ॥२६॥



भेल निपात असुरगण आज ।
सभ देव आएल देवि समाज ॥
तीनि भुवन गति आदि भवानि ।
सभ गन हलल दौड़ कए आनि ॥
तोहर चरन जग सकल अधार ।
तोहे देवि हरलह भूमिक भार ॥
तुअ पद सेवि पुरल मन आस ।
देव सकल मिलि पाओल बास ॥
देवलोक पद करत बखानि ।
शीवदत्त वर देहु भवानि ॥२७॥

अमर सभ मिलि कहए लागल,
तोहर पद सेवि दुःख भागल,
दुष्ट दानव सकल मारल,
जगत तारल हे ॥
सगुण निर्गुण देह धारिणि,
जगत के उत्पत्ति कारिणि,
दुःख दुर्गति सकल नाशिनि,
विन्ध्यवासिनि हे ॥
जतेक नर मुनि देव देवा,
सकल तुअ मिलि करत सेवा,
जगत महं देवि एक तोहर गति
मातु भगवति हे ॥
शीवदत्तक विनति थोड़ी,
आब किअए देवि भेलिह भोरी,
तोरित मन अब पुरह मोरी,
गिरिकिशोरी हे ॥२८॥
अमर सकल तप करत अहोनिसि, से देखि बोललि भवानि ।
जे करइत छुट सकल पराभव कहल वचन अनुमानि ॥

अगर गुगुल धूप दीप धूमन रस, करत प्रेम करि पूजा।
द्विज-भोजन बलि होम अहोनिसि, ताहि दहिन दश भुजा॥
"दुर्गाविजय" सुनत जे गाबत, पुजय चरन चित लाइ।
नाशय तकर परम दुख दारुण, मंगल दैव बढ़ाइ॥
तोँह जगजननि ! जगतदुखनाशिनि, तीनि भुवन सुखदाता।
शीवदत्त द्विज आए उबारह, बिसरि हलह् जनु माता॥३९॥

ई सभ सकल बुझाए कहल ऋषि,
सुनह सुरथ महराजे।
सुरथ - समाधि दुहु मन मानल,
पुजय चलल पद आजे॥
अतुलि भगति कए चरण अराधल,
बीसल ध्यान लगाए।
अपन गात बलि काटि चढ़ाओल,
अहोनिसि सेवल जाए॥
सेवइत चरण बरख तिनि बीतल,
परसनि भेलि भवानी।
मन इच्छा वर देल गोसाउनि,
पुरल मनोरथ आनी॥
देवि चरण सेवि भेल सकल सुख,
पाओल सुरथ निज राजे।
शीवदत्त मन तोरित पुरह देवि !
राखु सरन केर लाजे॥४०॥

★ समाप्त ★